① ख्याल शैली → लोकनाटकों के द्वारा मनोरंजन किया जाता है।
ख्याल राज. के लोकनाटक की एक विशिष्ट शैली है।
- ख्याल शब्द खेल से बना है। यहाँ खेल से अर्थ लोकमनोरंजन से है।
- ख्याल लोकनाटक की वह विधा है जिसमें धार्मिक सामाजिक अथवा पौराणिक व्याख्यानों को या कथानकों को पद्य बद्ध करके रचनाओं के रूप में अलग-2 पात्रों द्वारा नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- ख्याल शैली में वीर रस की प्रधानता है।
- राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक ख्याल है।
(i) राणा रत्न सिंह रो ख्याल।
(ii) राणी पद्मिनी रो ख्याल।
(iii) राजा हरिश्चन्द्र रो ख्याल।

प्रमुख ख्याल

(A) तुर्रा - कलंगी ख्याल → यह ख्याल MP में चन्देरी के शासक के यहाँ हिन्दू संत तुकनगीर व मुस्लिम संत शाह अली द्वारा विकसित नाट्य कला है।
- इस नाट्य में शास्त्रार्थ द्वारा काव्य दंगल का आयोजन किया जाता है।
- तुर्रा शिव का तथा कलंगी पार्वती का प्रतीक है।
- तुर्रा के खिलाड़ी हिन्दू तथा कलंगी के खिलाड़ी मुस्लिम होते है।
- तुर्रा खिलाड़ी का झंडा भगवा रंग का तथा वस्तु भी

SMC Education www.Resultuniraj.co.in

भी ~~[struck]~~ अगवां रंग के जबकि कलंगी के खिलाड़ी का झंडा व वस्त्र हरे रंग के होते हैं।

— राजस्थान में तुर्रा कलंगी ख्याल → चित्तौड़, घोसुण्डा, निम्बाहेड़ा, तोगूं, आसिन्द, बस्सी आदि।

— जयदयाल सोनी तथा हमीद बेग इसके प्रमुख कलाकार है।

(B) शेखावाटी ख्याल →

प्रवर्तक – नानूराम चिड़ावा

प्रमुख कलाकार → दुलियाराणा तथा नाथूलाल राणा।

— राजस्थान में यह ख्याल – झुंझुनूं, सीकर, चुरु में।

— शेखावाटी ख्याल की प्रमुख रचनाएँ → हीर-रांझा, राजा हरिशचन्द्र, राजा भर्तहरि।

(C) कुचामनी ख्याल →

— यह ख्याल कुचामन सिटी (नागौर) का है।
— इस ख्याल का स्वरूप ओपेरा के समान है।
— इस ख्याल के प्रमुख कलाकार लच्छीराम है।

(D) हैला ख्याल → इसका अर्थ है लम्बी टेर देना।

— यह ख्याल – करौली, स॰माधोपुर, दौसा में होता है।
— दौसा जिले में लालसोट का हैला ख्याल सुप्रसिद्ध है।

SMC Education

(43)

- लालसोट के पांचुराम व उसकी मण्डली इस ख्याल के प्रमुख कलाकार है।
- ढैला ख्याल में नौबत वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

(2) तमाशा शैली →
यह मूल रूप से महाराष्ट्र की लोकनाट्य शैली है।

- राज. में तमाशों का प्रमुख केन्द्र जयपुर है।
- जयपुर शासक स. प्रताप सिंह के शासन काल में पं. बंशीधर भट्ट ने इस कला को प्रारम्भ किया।
- तमाशा जयपुर ख्याल और ध्रुपद गायन का सम्मिलित रूप माना जाता है।
- यह खुले मंच पर होता है जिसे अखाड़ा कहते है।
- तमाशा के अन्य कलाकार है - फूलजी भट्ट, मन्नुजी भट्ट व गोपी जी भट्ट है।
- फूलजी भट्ट ने उस्ताद परम्परा को शुरु किया।
- गोपी जी भट्ट को तमाशा शैली के लिए लाइफ टाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

(3) रम्मत →

- रम्मत से अभिप्राय है खेल से।
- इसमें ऐतिहासिक व पौराणिक तथ्यों के आधार पर अभिनय किया जाता है।
- यह एक संगीतमय नाट्य है।

SMC Education

(44)

- रम्मत में धर्म की प्रधानता है।
- रामदेवजी के गीतों के साथ रम्मत की शुरुआत होती है।
- रम्मत का आयोजन फाल्गुन (होली) तथा श्रावण मास में पुष्करणा ब्राह्मणों के द्वारा खेली जाती है।
- रम्मत को खेलने वाले पात्र रम्मतीय अथवा खेलार कहलाते है।
- रम्मत में नगाड़ा व ढोलक वाद्य यंत्र का प्रयोग होता है।
- रम्मत का उद्भव जैसलमेर (तेजकवि) से माना जाता है।
- तेजकवि की प्रमुख रम्मतें अथवा जैसलमेरी रम्मतें थी - मूमल तथा स्वतंत्र बावनी जिसके रचयिता तेजकवि थे।
- सुप्रसिद्ध रम्मतें बीकानेर में आचार्यों का चौक की है।
- बीकानेरी रम्मतों के प्रमुख कलाकार - फागू महाराज, सुआ महाराज, मनीराम व्यास है।
- रम्मत के अन्य केन्द्र है - फलौदी, पोकरण।

SMC Education